Subject :- Sociology Date :- 10/07/2020 ①
Class :- D-I Paper :- Subsidiary
Topic :- समाजीकरण के सिद्धान्त
By :- Dr. S.N. Choudhary, Guest Teacher, Marwari college

समाजीकरण के सिद्धान्त Online Study Material No: 109

समाजीकरण की समस्या का अध्ययन समाजशास्त्रीय अध्ययन की मुख्य विषय वस्तु है। विभिन्न सामाजिक वैज्ञानिकों ने एक व्यक्ति के समाजीकरण में विभिन्न अभिकरणों (Agencies) के महत्व को स्वीकार किया है। कुछ विचारकों ने समाजीकरण की प्रक्रिया में सुझाव, अनुकरण, सहानुभूति, कल्पना, अंतः क्रियात्मक सम्बन्ध, पुरस्कार, दंड आदि की भूमिका को स्वीकार किया है। कुछ विचारकों ने समाजीकरण से सम्बन्धित सिद्धांतों का प्रतिपादन कर अपना विचार प्रस्तुत किया है। जिन विचारकों ने समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया है उनमें C.H. Cooley, G.H. Mead, Freud, Emile Durkhim इत्यादि उल्लेखनीय स्थान रखते हैं।

कुछ विद्वानों द्वारा प्रस्तुत समाजीकरण के सिद्धांतों पर प्रकाश डाला जा रहा है, जो निम्नलिखित है:-

C.H. Cooley का समाजीकरण के सिद्धांत :-

अमेरिका के एक प्रमुख समाजशास्त्री C.H. Cooley ने सामान्य निरीक्षण करने तथा अपने परिवार के बच्चों का अध्ययन करने के बाद समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया। Cooley के अनुसार समाजीकरण का सम्बन्ध आत्म के विकास (Rise of Self) से है। उन्होंने एक व्यक्ति के समाजीकरण या आत्म के विकास में कल्पना को बहुत महत्व दिया है तथा इस बात की चर्चा की है कि कल्पना के आधार पर ही एक व्यक्ति के आत्म का विकास होता है और जिस तरह आत्म का विकास होता है उसी के अनुरूप एक व्यक्ति के अन्दर गुणों का विकास होता है। साथ ही कूले ने एक व्यक्ति के समाजीकरण में अन्तःक्रिया (Interaction) के महत्व को भी स्वीकार किया है और इस बात का उल्लेख किया है कि जब तक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के सम्पर्क में नहीं जाएगा और उनके साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित नहीं करेगा तब तक उसके व्यक्तित्व के विकास या समाजीकरण का प्रश्न ही नहीं उठेगा।

कूले ने अपनी 'स्वयं की दर्पण' (Looking glass Self) की अवधारणा के माध्यम से समाजीकरण की प्रक्रिया पर भी प्रकाश डाला है। उन्होंने अपने समाजीकरण के सिद्धांत में इस बात का उल्लेख किया है कि जब व्यक्ति अन्य लोगों के सम्पर्क में आता है और उनके साथ अन्तः क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करता है तब वह दूसरों की निगाहों से अपने आप को देखता है। इसलिए कूले ने लिखा है कि दूसरे व्यक्तियों का विचार, भावनाएँ, निर्णय आदि व्यक्ति के स्वयं का दर्पण होता है और उसी दर्पण में वह आत्म का दर्शन करता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार अपने चेहरे और वस्त्रों को शीशे में देखकर उसके गुणों और अवगुणों के सम्बन्ध में यथार्थ

Scanned with CamScanner

रूप में जानने में हम सक्षम होते हैं, उसी प्रकार दूसरे व्यक्तियों के सम्पर्क में आने पर कल्पना के सहारे हम यह जानने में सक्षम होते हैं कि लोग हमारे बारे में कैसी धारणा रखते हैं। अपने सम्बन्ध में दूसरों के विचारों और धारणाओं की कल्पना करने के पश्चात अपने सम्बन्ध में हम अच्छी या बुरी धारणा विकसित करते हैं और उसी के आधार पर हमारे अन्दर श्रेष्ठता या निम्नता की भावना (Superiority or inferiority complex) उत्पन्न होती है। उदाहरणार्थ - यदि कोई बच्चा दूसरों से हमेशा यह सुनता है कि वह निकम्मा और आलसी है तो दूसरों का विचार उसके अन्दर हीनता की भावना उत्पन्न करता है। इसके विपरीत यदि वह अपनी कल्पना के सहारे यह महसूस करता है कि उसके बारे में दूसरों के विचार अच्छे हैं तो उसे प्रसन्नता होती है और उसके अन्दर गर्व की भावना उत्पन्न होती है और उसी के अनुरूप व्यक्तित्व भी विकसित होता है। इस तरह यह स्पष्ट होता है कि कूले ने समाजीकरण के लिए कल्पना और अन्तः क्रिया को विशेष महत्व दिया है।

आलोचना

कूले का उपर्युक्त सिद्धांत कुछ रूपों में दोषपूर्ण प्रतीत होता है। उनका यह कथन कि दूसरे व्यक्तियों के विचार और धारणाएँ एक व्यक्ति के लिए स्वयं का दर्पण हैं, उचित नहीं प्रतीत होता है। अपनी आकृति के सम्बन्ध में हम दूसरे व्यक्तियों के विचारों और धारणाओं की कल्पना कर सकते हैं कि यह आवश्यक नहीं कि हमारी वह कल्पना वास्तविक हो। हमारी कल्पना हमारे अंदर गलत प्रतिबिम्बों को भी विकसित कर सकती है।

G. H. mead का समाजीकरण का सिद्धांत

प्रो० जी० एच० मीड ने अपने एक लेख 'A Behaviouristic Account of the Significant Symbol' में अपना समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार आत्म का विकास या व्यक्तित्व का विकास इस बात पर निर्भर करता है कि व्यक्ति स्वयं को एक वस्तु के रूप में प्रस्तुत करने की कितनी योग्यता रखता है। उन्होंने यह विचार दिया है कि समाजीकरण के लिए अपने सम्बन्ध में चेतना (Self consciousness) अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने मैं (I) और मुझे (me) के अन्दर के आधार पर समाजीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया है कि एक बच्चा का समाजीकरण तबतक संभव नहीं होता जब तक वह अपने और दूसरों में भेद करना नहीं सीख लेता है। जब एक बच्चा अपने और दूसरों में अंतर महसूस करने लगता है भी वह अपने सम्बन्ध में चेतन होता है और जब वह स्वयं के सम्बन्ध में चेतन (conscious) होता है तभी वह दूसरों के विचारों, मनोभावों, आदर्शों और मूल्यों के सम्बन्ध में जागरूक होता है। mead के अनुसार प्रारंभिक काल में एक बच्चा अपने तथा

Scanned with CamScanner

दूसरों के बीच अन्तर महसुस नही कर पाता है। यही कारण है कि जब वह खिलौने या गुड़ियों के साथ खेलता है तब उसे भी जानदार मान लेता है और उसके प्रति वैसा ही व्यवहार करने लगता है, जैसा कि उसके प्रति उसके माता-पिता करते हैं। दुसरे शब्दो मे यह कहा जा सकता है कि जब एक बच्चा गुड़िया के साथ खेलता है तब वह स्वयं अपने माता-पिता की भूमिका अदा करता है और खिलौने या गुड़ियों से स्वयं अपनी भूमिका अदा करवाता है। धीरे-धीरे वह यह अनुभव करने लगता है कि वह स्वयं माता-पिता नही है और न ही गुड़िया वह स्वयं है। अर्थात वह इनसे कुछ अलग है और उसका पृथक अस्तित्व है। इस तरह का विचार एक बच्चा के अन्दर इसलिए उत्पन्न होता है क्योंकी वह यह महसुस करता है कि अपने माता-पिता के व्यवहार के प्रतिक्रिया स्वरूप वह जैसा व्यवहार करता था, उस तरह की प्रतिक्रिया उसके व्यवहार के फलस्वरूप गुड़िया व्यक्त नही करती है। जैसे → जब उसके माता-पिता उसे पीटते थे तो वह रोता था। किंतु जब वह गुड़िया को पीटता है तब गुड़िया नही रोती है। अतः धीरे-धीरे वह यह महसुस करने लगता है कि गुड़िया एक निर्जीव पदार्थ है। इसी चेतना के आधार पर एक बच्चा स्वयं में तथा अन्य व्यक्तियों में अन्तर महसुस करता है। स्वयं के सम्बन्ध में बच्चे की यह चेतना या आत्म का विकास ही अपने तथा दुसरों के प्रति उसके व्यवहार को निश्चित करता है। फलस्वरूप धीरे-धीरे वह विभिन्न प्रकार की आदतें सीख लेता है। एक बच्चा जिस तरह की आदत सीखता है, उसी के अनुरूप उसका समाजीकरण होता है और व्यक्तित्व विकसित होता है। आत्म का विकास कैसे होता है, इस बात को स्पष्ट करते हुए Mead ने लिखा है "आत्म का विकास आचरण में होता है जबकी व्यक्ति अनुभवों में स्वयं अपने लिए एक सामाजिक वस्तु बन जाता है। ऐसा उस समय होता है जब व्यक्ति उस प्रकार की मनोवृत्ति को अपना लेता है या प्रतिक्रिया कर सकता है। ... बच्चा धीरे-धीरे स्वयं अनुभव में एक सामाजिक प्राणी बन जाता है और वह स्वयं अपने प्रति उसी प्रकार के कार्य करता है जैसा कि वह दुसरों के प्रति करता है।"

Freud का समाजीकरण का सिद्धांत

एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक फ्रायड ने भी समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपने समाजीकरण के सिद्धांत को मानसिक क्रियाओं के आधार पर स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इनके अनुसार- जिस प्रकार किसी समुद्र में हिमखंड का अधिकांश भाग पानी में रहता है, उसी प्रकार मानव व्यवहार का भी अधिकांश भाग अनदेखा होता है और अधिकांश मानव व्यवहार अचेतन शक्तियों (Unconscious forces) द्वारा संचालित होता है। उन्होंने 'स्व' अथवा मानव व्यक्तित्व को इड (Id), अहम (Ego) और परा अहम (Super ego) इन तीनों में विभाजित किया है।

Scanned with CamScanner

(4)

इनके अनुसार Id मानव की मूल प्रवृत्तियों, असामाजीकृत इच्छाओं एवं स्वार्थों का योग है। Id के सामने नैतिक और अनैतिक तथा अच्छा या बुरा का प्रश्न ही नहीं होता है। इसके विपरीत Ego 'स्व' या व्यक्तित्व का चेतन एवं तार्किक पक्ष है जो व्यक्तियों को सामाजिक परिस्थितियों के अनुकूल व्यवहार करने का निर्देश देता है और Id पर नियंत्रण रखता है। Ego भी Id के सामने नैतिक अनैतिक को विशेष महत्व नहीं देता है, किंतु यह अधिक व्यावहारिक है क्योंकी यह परिस्थितियों के अनुकूल होने पर ही अपनी इच्छा की पूर्ति की स्वीकृति देता है। जहाँ तक Super Ego का प्रश्न है, यह कहा जा सकता है कि यह सामाजिक आदर्शों और मूल्यों का योग है। वस्तुतः Id एक घोड़े के समान है, जो किसी भी दिशा में भागना चाहता है, जबकी Ego घोड़े पर बैठे सवार की भाँति है जो उसे दिशानिर्देश देता है और Super ego सड़क पर खड़े Traffic Police की भाँति है जो घोड़े पर सवार व्यक्ति द्वारा नियम का उल्लंघन करने पर उसे सही दिशा बताता है। इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि Super Ego, Id और Ego दोनों नियंत्रण रखता है एवं व्यक्ति को समाज के आदर्शों और मूल्यों के अनुरूप व्यवहार करने का निर्देश देता है।

Freud ने अपने समाजीकरण के सिद्धांत में इस बात का भी उल्लेख किया है कि व्यक्ति अपनी मौलिक इच्छाओं को संतुष्ट कराना चाहता है, जबकि समाज विभिन्न प्रकार के निषेधों (Taboo) के माध्यम से उसकी मौलिक इच्छाओं और आक्रामक भावनाओं पर प्रतिबंध लगाता है। फलस्वरूप Id और Super Ego में सदा संघर्ष चलता रहता है। फ्रायड ने इस बात का भी उल्लेख किया है कि इस संघर्ष में Id हार जाता है किंतु कभी-कभी Super Ego की अवहेलना कर देता है और व्यक्ति समाज विरोधी कार्य कर बैठता है। फ्रायड ने Id और Super Ego के पारस्परिक संघर्ष की प्रक्रिया से ही व्यक्ति का समाजीकरण होना है। इन्होंने कहा है कि बचपन में व्यक्ति सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों से अपरिचित रहता है। एक बच्चा Id से प्रभावित होकर कोई कार्य करता है। जैसे-जैसे वह अन्य लोगों के सम्पर्क में आता है वैसे-वैसे उसे इस बात का ज्ञान होता है कि अपनी आवश्यकताओं को कैसे पूरी करनी चाहिए। यह Ego के विकास की स्थिति है। कुछ और सयाना होने पर वह सामाजिक आदर्शों और मूल्यों से परिचित होता है और उसे इस बात की जानकारी हो जाती है कि समाज किस प्रकार के व्यवहार को स्वीकार करेगा और किस प्रकार के व्यवहार को अस्वीकार करेगा। वह नैतिक और अनैतिक कार्यों में अन्तर महसूस करने लगता है। एक व्यक्ति Id और Ego की बात ठुकरा कर जितना अधिक Super Ego के अनुसार व्यवहार करता है, उसका समाजीकरण उतना ही अधिक सफल होता है। इस तरह यह स्पष्ट है कि जहाँ C. H. Cooley और G. H. Mead ने आत्म (Self)

Scanned with CamScanner

की सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम माना है, वहीं फ्रायड ने Self को मानसिक क्रियाओं (mental actions) का परिणाम माना है।

आलोचना

यद्यपि फ्रायड ने मानसिक क्रियाओं के आधार पर समाजीकरण का सिद्धांत प्रस्तुत किया है किंतु उनका विचार कुछ रूपों में उचित नहीं प्रतित होता है। फ्रायड ने मानव व्यक्तित्व को Id, ego & Super ego तीन भागों में विभाजित किया है, उसे अनुभविक प्रयोग (Empirical test) के आधार पर सिद्ध करना संभव नहीं है। एक सिद्धांत जिसे अनुभविक प्रयोग के आधार पर सिद्ध करना संभव न हो, उसे वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं कहा जा सकता।

कुछ विचारकों का कहना है कि फ्रायड ने समाजीकरण में मानसिक तत्वों पर आवश्यकता से अधिक बल दिया है। फलस्वरूप समाजीकरण का प्रस्तुत करने में फ्रायड अधिक अतिवादी (Extremist) बन गये हैं।

उपयुक्त दोषों के बावजूद भी फ्रायड के समाजीकरण के सिद्धांत के महत्व को पूर्णतया अस्वीकार नहीं किया जा सकता। आज अधिकांश समाज में वैज्ञानिक फ्रायड के इस विचार से सहमत है कि मानव प्रेरणाएँ (Human motives) अचेतन और मानव के तार्किक नियंत्रण से बाहर होती है तथा सदैव ही व्यवस्थित समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होती। फ्रायड के समाजीकरण के सिद्धांत के सम्बन्ध में इस तरह का विचार Hurlock & Hunt ने भी अपनी पुस्तक 'Sociology' में दिया है।

S. N. Choudhary
Marwari College
L. N. M. U